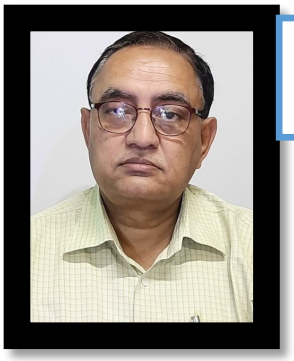

प्रो. यशवंत सिंह

मणिपुर, विश्वविद्यालय
इम्फाल, मणिपुर

सक्रिय राजा

बहुत समय पहले की बात है, जंगल का राजा शेर बूढ़ा हो चला था, जंगल का शासन चलाने में उसकी कोई रुचि नहीं रह गई थी; वह यो ही निष्क्रिय पड़ा रहता था, जिससे जंगल में अव्यवस्था फैल रही थी । अतः जंगल में निवास करने वाले समस्त पशु-पक्षियों ने इस समस्या पर विचार करने हेतु एक सभा का आयोजन किया । सभा के लिए निश्चित दिन पर सभी पशु-पक्षी आकर अपने-अपने स्थान पर बैठ गये; लेकिन सभा के समय एक बन्दर अपने स्थान पर न बैठकर इधर- उधर कूदता फिरता रहा । निष्क्रिय राजा की समस्या पर काफी विचार करने के बाद यह सहमति बनी कि किसी सक्रिय पशु या पक्षी को जंगल का राजा बनाया जाय । इसी समय सभी ने बन्दर को लगातार उछलते-कूदते देखा तथा उन्हें यह महसूस हुआ कि यह बन्दर ही हम सबके बीच सबसे सक्रिय है; अतः इसे ही जंगल का राजा बनाया जाय । सभी पशु-पक्षियों ने इस पर अपनी सहमति व्यक्त की तथा बन्दर को शेर की जगह जंगल का राजा बना दिया गया । बन्दर सक्रियता से जंगल का शासन चलाने लगा ।

एक दिन शेर ने अपनी भूख मिटाने हेतु बकरी के बच्चे को पकड़ लिया; बकरी दौड़ी -दौड़ी बन्दर राजा के पास पहुंची तथा अपने बच्चे को बचाने हेतु राजा से फरियाद की । बन्दर तुरंत बकरी के साथ घटनास्थल की ओर चल पड़ा; बकरी ने दूर से ही शेर की ओर इशारा करके कहा- ' देखो राजा जी! वह रहा शेर, जिसने मेरे बच्चे को अपने मुंह में दबोच रखा है।'बन्दर तुरंत सक्रिय होकर पास के एक पेड़ पर चढ़ गया तथा एक डाल से दूसरी डाल पर कूदने लगा ।

।इसी समय बकरी ने शेर को मुंह से बच्चे की गर्दन को दबाते देखा; उसने बन्दर से पुनः फरियाद की- ' देखो राजा जी ! शेर मेरे बच्चे की गर्दन को दबा रहा है।' बन्दर और तेजी से एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर उछलने कूदने लगा लेकिन वह शेर के पास नहीं गया ।

अब बकरी ने देखा कि शेर ने उसके बच्चे की गर्दन को इतनी जोर से दबा रखा है कि उससे खून टपक रहा है तथा बच्चा मरणासन्न स्थिति में पहुंच गया है । अतः बकरी जोर से चिल्ला कर बोली -' देखो राजा जी! शेर मेरे बच्चे को मारे डाल रहा है और आप कुछ भी नहीं कर रहे है । ' यह सुनकर बन्दर ने और भी तेजी से एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर उछलते-कूदते हुए बकरी को जबाव दिया-'देखो बकरी! मैं अपनी तरफ से पूरी तरह से सक्रिय होकर प्रयास कर रहा हूं; अब तुम्हारा बच्चा बचे या न बचे, इसमें भला मैं क्या कर सकता हूं? ' बकरी बेचारी रोती-बिलखती रही; वही बन्दर राजा ने अन्त समय तक अपनी उछल-कूद भरी सक्रियता जारी रखी । धीरे - धीरे भूखे शेर ने बकरी के बच्चे को मारकर उसको खा लिया । इस तरह बन्दर राजा के सक्रिय रहने के बावजूद भी बकरी अपने बच्चे को जीवित नहीं पा सकी ।